हिन्दीः राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ

भाषा केवल सम्प्रेषण ही नहीं करती चरित्र का उदघाटन भी करती है। भाषा मात्र व्यक्ति के चरित्र को ही नहीं, पूरे राष्ट्र के चरित्र को उजागर करती है। समाज को जोड़ती है, समाज को धारण करती है। 'हिन्दी' भाषा ने समाज को जोड़ा और धारण भी किया है जिसके कारण वह न केवल भारत में बल्कि भारत के बाहर भी अपनी विशिष्ट क्षमताओं के कारण जानी-पहचानी जाती है तथा बोली-समझी जाती रही है। वह आज अपनी भाषाई विशेषताओं- सरलता, सहजता, शाब्दिक उदारता और साहित्यिक समृद्धि के कारण न केवल एशियाई देशों में बल्कि विश्व के अनेक देशों में निरन्तर लोकप्रिय हो रही है। भारत के अन्दर की बात करें तो यह उत्तर में श्रीनगर और लद्दाख से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक तथा पूर्व में लेज़(अरूणाचल प्रदेश) और कलकत्ता से लेकर पश्चिम में जैसलमेर और सूरत तक बोली जाती है। उत्तरप्रदेश, उत्तरांचल, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखंड, राजस्थान, हिमाचलप्रदेश और हरियाणा तो हिन्दी प्रदेश हैं ही, साथ ही राष्ट्रभाषा, केन्द्र की राजभाषा एवं सम्पूर्ण देश की लोक एवं राज की अंतर्प्रांतीय संपर्क भाषा हिन्दी होने के कारण अहिन्दी भाषी प्रदेशों में भी हिन्दी मातृभाषियों एवं अहिन्दी मातृभाषियों दोनों द्वारा बोली जाती है।

आधुनिक काल में नवजागरण, समाज सुधार के विभिन्न आंदोलनों तथा विशेषकर देश के स्वाधीनता संग्राम में अखिल भारतीय स्तर पर हिन्दी को ही अपनाया गया था। देश को ब्रिटिश दासता से मुक्ति दिलाने के संघर्ष में हिन्दी की विशेष भूमिका रही है। देश का नवचेतना सम्पन्न समाज, धर्म समाज और राजनीति सभी क्षेत्रों में नव-आंदोलनों का प्रवर्तन और नेतृत्व करने वाला बुद्धिवादी समाज एकमत से न केवल हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रुप में स्वीकार कर चुका था, बल्कि विभिन्न स्तरों पर वह इसके लिए प्रयत्नशील भी था। वे अपना कार्य हिन्दी के माध्यम से कर रहे थे। इस प्रकार हिन्दी अखिल भारतीय स्तर पर राष्ट्रीय और चेतना के प्रचार-प्रसार का माध्यम ही नहीं बनी, बल्कि वह देश की स्वतंत्र-चेतना का प्रतीक बन गई।

हिन्दी भारत की राष्ट्रीय तथा भावात्मक एकता की वाहिका है। महात्मा गाँधी तथा अन्य महापुरुषों ने स्वाधीनता संग्राम में आजादी की आवाज इसी भाषा में लगाई थी। इसे पूर्णता प्रदान करने में सभी धर्मो-जातियों के लोगों का योग रहा है। जितना इसे हिन्दु-संतों, कवियों ने संवारा है, उतना ही रसखान, रहीम, शेख, कबीर आदि ने इसका श्रृंगार किया है। फादर कामिल बुल्के जैसे ईसाई पादरियों ने इसकी महिमा गाकर सच्चे अर्थों में इसे राष्ट्रीय एकता का मुख्य आधार बनाया है। भारतीय संदर्भ में बुल्के कहते हैं-'संस्कृत महारानी, हिन्दी बहूरानी और अंग्रेजी नौकरानी है।' राहुल सांकृत्यायन जिनका पूरा जीवन साहित्य को समर्पित था, ज्ञान की खोज में घूमते रहना उनकी जीवनचर्या थी। वे हिन्दी के अनन्य प्रेमी थे। उन्हीं के शब्दों में- 'मैंने नाम बदला, वेशभूषा बदली, खान-पान बदला, सम्प्रदाय बदला लेकिन हिन्दी के संबंध में मैंने विचारों में कोई परिवर्तन नहीं किया।'

अंग्रेज जब भारत में आए तो शुरु में उन्होंने फारसी और संस्कृत पढ़ी, लेकिन वे यह बात शीघ्र समझ गए कि यह जनसंपर्क की भाषा नहीं है। तब उनका रूझान दूसरी भारतीय भाषाओं की ओर गया और वह शीघ्र ही जान गए कि सही अर्थों में यदि जनसंपर्क की कोई भाषा हो सकती है, तो वह हिन्दी ही है। जो यह कहते नही थकते हैं कि हिन्दी में राष्ट्रभाषा होने की क्षमता नहीं है तो जापान का एक उदाहरण देना चाहूँगा। जब जापानी विद्यार्थी विज्ञान पढ़ कर स्वदेश लौटे तो उनके सामने समस्या आई कि हम जो कुछ सीखकर आए हैं, उसके लिए जापानी भाषा में शब्द नहीं है। तो जापानी सरकार ने कहा-'सब काम जापानी भाषा में होगा जिन अंग्रेजी शब्दों के लिए हमारी भाषा मे शब्द नहीं हैं उनको वैसा का वैसा ले लीजिए और फिर धीरे-धीरे उनके जापानी पर्याय खोज निकालने की कोशिश कीजिए।' शताब्दियों तक आयरलैंड के निवासी अंग्रेजी बोलते रहे। सन् 1922 में जब उसे स्वतंत्रता मिली, तो जनसंख्या का केवल 12% भाग आयरिश समझता था। तब राजनीतिज्ञ और लार्ड लोग किसानों के पास अपनी भाषा सीखने के लिए गए और आज गैलिक भाषा ने सभी क्षेत्रों में अंग्रेजी का स्थान ले लिया है। भारत जिसके पास आज एक ऐसी भाषा(हिन्दी) है जिसको 70% से अधिक लोग व्यवहार में लाते हैं। फिर अपनी भाषा के प्रति इतना अलगाव क्यों? यदि हम विदेशी भाषा को अपने विकास की सीढ़ी मानते हैं तो इसमें गलत क्या हैं। जितनी भाषाओं का ज्ञान होगा उतना ही अच्छा है। लेकिन अपनी राष्ट्र भाषा तथा मातृभाषा को दरकिनार करना क्या न्यायोचित है। यदि विदेशी भाषाओं के प्रति इतना ही लगाव है तो वहाँ भाषा के प्रति जितना सम्मान है उतना सम्मान यहि अपनी भाषा के प्रति होगा तो सारी समास्याओं का हल सहज में ही मिल जाएगा। रूस में एक प्रांत है दागिस्तान। वहाँ की औरत जब दूसरी औरत को वददुआ देती है, तो कहती हैः-'अल्लाह तुम्हारे बच्चों को उस भाषा से बंचित कर दे, जिसमें तुम बोलती हो।' वहीं पर एक दूसरी जाति है 'आबार'। उनकी मातृभाषा भी आबार ही है। आबार माँ का एक बेटा देश से बाहर(फ्रांस) जाता है, वहाँ उससे उसी देश(आबार जाति) का एक व्यक्ति मिलता है। दोनों में बातचीत होती है। लेकिन पहले वाला उस व्यक्ति से फ्रेंच में बातचीत करता है। और वह व्यक्ति रूसी में। कुछ समय बाद लौट कर वह उस आदमी की माँ से यह सब वृतांत सुनाता है तो उसकी माँ कहती है-'मेरा बेटा उस भाषा को नहीं भूल सकता जिसको उसकी माँ ने उसे सिखाया था। तुम किसी दूसरे व्यक्ति से मिले होंगे। मेरा बेटा तो मर गया।'

हिन्दी भाषा और साहित्य को राष्ट्रीय मंच पर आसीन करने में जितना सहयोग हिन्दी भाषा-भाषियों का रहा है उतना ही सहयोग तथा योगदान अहिन्दी क्षेत्र के लोगों का रहा है। जिन्होंने न केवल हिन्दी को एक सशक्त राष्ट्रीय आधार प्रदान किया बल्कि देश के कोने-कोने में जाकर हिन्दी का समर्थन किया और विदेशों में जाकर इसकी पुरजोर वकालत भी की। आधुनिक भारतीय भाषाओं में मध्यदेश के अलावा पंजाब, कश्मीर, गुजरात, महाराष्ट्र और दक्षिण भारत के क्षेत्रों में किसी न किसी रुप में हिन्दी की मौजूदगी देखी जाती है।

कश्मीर आरंभ से ही देशी-विदेशी पर्यटकों का केन्द्र रहा है। जिसके माध्यम से वहाँ के लोग हिन्दी भाषा के संपर्क में आए। कश्मीर के प्रथम मुसलमान शासक शमसुद्दीन शाह ने हिन्दी को

आश्रय दिया। विभिन्न भाषाओं के जानकार जैनुल अबीद्दीन के शासनकाल में अनेक अरबी-फारसी पुस्तकों का अनुवाद हिन्दी में हुआ।

बंगाल में शुरू से ही हिन्दी की व्यापक परम्परा रहा है. 16वीं सदी से 18वीं सदी तक बंगाल ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने एक रुपक द्वारा प्रांतीय और राष्ट्रभाषा के संबंध को स्पष्ट करते हुए लिखा है- 'आधुनिक भारत की संस्कृति एक विकसित शतदल के समान है। जिसका एक-एक दल, एक-एक प्रांतीय भाषा और उसका साहित्य संस्कृति है। किसी एक को मिटा देने से उस कमल की शोभा नष्ट हो जाएगी। हम चाहते हैं कि भारत की सब प्रांतीय बोलियां जिनमें सुन्दर साहित्य की सृष्टि हुई है, अपने-अपने घर में रानी बन कर रहें। प्रांत के जनगण की हार्दिक चिंता की प्रकाश भूमि स्वरुप कविता की भाषा होकर रहे और आधुनिक भाषाओं के हार के मध्य मणि हिन्दी भारत-भारती होकर विराजती रहे।'

बारहवीं सदी में रामानुजाचार्य द्वारा वैष्णव मठ की स्थापना और बाद में चैतन्य महाप्रभु के प्रभाव से उड़ीसा में भी हिन्दी का प्रचार हुआ। गुजरात तो हिन्दी भाषी प्रदेशों के निकट है। महात्मा गाँधी का हिन्दी के प्रति सम्मान और योगदान जग जाहिर है।

मराठी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। संत ज्ञानेश्वर, नामदेव, तुकाराम हिन्दी के जाने माने विद्वान हैं। शिवाजी तथा उनके पुत्र संभाजी ने हिन्दी को काफी सम्मान दिया।

दक्षिण भारत में मैसूर, मद्रास, केरल और आंध्रप्रदेश में यद्यपि द्रविड़ परिवार की भाषाओं का प्रचलन है लेकिन वहाँ भी हिन्दी की कमोवेश मौजूदगी है। दक्खिनी हिन्दी का विकास दक्षिणी राज्यों में ही हुआ है।

अतः हम कह सकते हैं कि हिन्दी सदियों से भारत की व्यापक और लोकप्रिय भाषा रही है। वह जन सामान्य से लेकर प्रबुद्ध वर्ग की भाषा है, उसमें उच्चस्तरीय साहित्य है तथा समाज को जोड़ने वाली भाषा है। वह सम्पूर्ण राष्ट्र की भाषा है।

अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ

वैसे तो किसी भाषा का विस्तार और विकास, उस भाषा को बोलने वाले तथा व्यवहार में लाने वालों की संख्या पर निर्भर करता है। हिन्दी का इस दृष्टिकोंण से विस्तार तो हुआ ही है, इसे और विस्तृत एवं विकसित किया है भारतीय संस्कृति ने। जो विदेशों में काफी लोकप्रिय है। भारत से बाहर जाने वाले लोग चाहे वे किसी भी कारण से गए हों, अपनी संस्कृति तथा भाषा को भी साथ लेकर गए और उसे विदेशी संस्कृति व भाषा के मध्य जीवित बनाये रखा। वहाँ रहकर हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महती भूमिका निभाई। आज विश्व के अनेक देशों में हिन्दी का स्तर काफी बढ़ा है। इसे बढ़ावा देने में निजी संस्थाएं, धार्मिक संस्थाएं और सामाजिक संस्थाएं तो आगे आ ही रही हैं, वहाँ के विद्यालयों, विश्वविद्यालयों यहाँ तक की अनुसंधान संस्थाओं में हिन्दी के पठन-पाठन एवं शोध की अच्छी व्यवस्था है।

भारत से जो गिरमिटिया मजदूर मॉरीशस, फीजी, गुयाना, त्रिनिदाद, सूरीनाम आदि देशों में गए, इन लोगों ने भी अपने-अपने देशों में हिन्दी का व्यापक रुप से प्रचार-प्रसार किया और

अपनी सांस्कृतिक पहचान के रुप में गीता और रामायण भी ले गए। रहीम के दोहे और कबीर की साखी ले गए और पूर्ण मनोयोग से अपनी संस्कृति की रक्षा में लगे रहे। इन मजदूरों के भाषा प्रेम के कारण ही आज विश्व के कई देशों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार हो रहा है। मॉरीशस में हिन्दी प्रचार की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए वहाँ के तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. शिवसागर रामगुलाम ने कहा था कि 'हमें इस बात का गर्व है कि बीसवीं सदी के शुरु में भारत में जो सामाजिक जागरण हुआ उसकी रोशनी मॉरीशस में भी पहुँची। स्वामी दयानन्द ने वेदों के आधार पर आर्यसमाज की स्थापना की और यह आंदोलन 1920 में मॉरीशस में पहुँचा। 1935 में हिन्दी प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई। साथ-साथ सनातन धर्म सभा, हिन्दू महासभा, सेवा शिविर और त्रिवेणी जैसी संस्थाओं ने भी हिन्दी के विकास में योगदान दिया। आज मॉरीशस में न केवल हिन्दी हायर सेकेंडरी में पढ़ाई जाती है बल्कि अनेक लेखक कवि और पत्रकार हिन्दी में रचना भी करते हैं। इन लेखकों की रचनाएं भारत की पत्र-पत्रिकाओं में भी प्रकाशित होती हैं। 1968 में मॉरीशस की आजादी के बाद हिन्दी के विकास में मॉरीशस ने जो योग दिया है उस पर हम गर्व कर सकते हैं।'(सं.प्रो.सुरेश ऋतुपर्णा, हिन्दी सब संसार, पृ.93-94)

विश्व के अनेक देशों मे रह रहे भारतीयों और हिन्दी भाषियों का अनुमान लगाया जाए तो नेपाल में 80 लाख, दक्षिण अफ्रीका में 8.90 लाख, मॉरीशस में 6.85 लाख, संयुक्त राज्य अमेरिका में 3.17 लाख, यमन में 2.33 लाख, युगांडा में 1.47 लाख, जर्मनी में 0.30 लाख, न्यूजीलैंड में 0.20 लाख, सिंगापुर में 0.05 लाख एवं यू.के. व यू.ए.ई. में भी काफी संख्या में हिन्दी भाषी लोग निवास करते हैं। फिजी में कुल जनसंख्या का 44 प्रतिशत, त्रिनिडाड एवं टोवैगो में 45 प्रतिशत, गुयाना में 51 प्रतिशत के लगभग भारतीय लोगों की आबादी है। जिनकी न केवल भाषा बल्कि संस्कृति, जो उन्हें भारतीयता से जोड़े हुए रखती है।

आज हिन्दी ने विश्व के अनेक देशों को अपनी ओर आकर्षित किया है और यही कारण है कि विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में अक्षराभ्यास से लेकर अनुसंधान तक विभिन्न स्तरों पर हिन्दी की पढ़ाई होती है। वहाँ के विश्वविद्यालयों में तुलसीदास, सूरदास, प्रेमचन्द, प्रसाद, पंत, निराला आदि की रचनाएँ तथा आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य को बड़ी रुचि से पढ़ाया जा रहा है। रूसी, चीनी, जापानी, अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच, चेक आदि भाषाओं में इन पुस्तकों के अनुवाद हो चुके हैं या हो रहे हैं।

विदेशों से प्रकाशित हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं ने हिन्दी को वैश्विक आधार प्रदान किया है। जिनमें मॉरीशस से दुर्गा, हिन्दुस्तान, आर्योदय, जनता, फिजी से शांतिदूत, फिजी-वृतांत, जय फिजी, नार्वे से शांतिदूत, लंदन से नवीन वीकली, अमर दीप, अमेरिका से विश्व विवेक, हिन्दी जगत, नेपाल से विविध भारत, श्रीलंका से बाल भारती, चंदा मामा, सरिता,जापान से ज्वालामुखी, चीन से सचित्र चीन, कनाडा से विश्व भारती आदि पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं। तथा हिन्दी साहित्य नामक अर्द्धवार्षिक पत्रिका में जापानी भाषा में हिन्दी साहित्य की प्रसिद्ध रचनाओं के अनुवाद प्रकाशित हो रहे हैं। यू.ए.ई. के हम एफ.एम. सहित अनेक देश हिन्दी कार्यक्रम प्रसारित कर रहे है, जिनमें बी.बी.सी., चीन के चायना रेडियो इंटरनेशनल(हिन्दी प्रसारण 15 मार्च 1959 से शुरू) की हिन्दी सेवा विशेष रुप से उल्लेखनीय हैं, शामिल हैं।

विदेश मंत्रालय, भारत सरकार राजभाषा नीति के क्रियान्वयन के लिए सक्रिय रुप से कार्य कर रही है। इसके साथ-साथ विदेशों में हिन्दी प्रचार-प्रसार में भी अहम भूमिका निभा रही है। प्रथम पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत जिन 10 देशों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार का कार्य शुरू किया था इनमें फिजी, मॉरीशस, गुयाना, त्रिनिनाद, श्रीलंका, नेपाल, सूरीनाम आदि देश शामिल हैं। इन देशों में स्थित भारतीय मिशनों में हिन्दी की पुस्तकें भेजने की व्यवस्था शुरु की है। सरकार ने केन्द्रीय हिन्दी संस्थान में विश्व के विभिन्न देशों के लोगों को हिन्दी के अध्ययन की भी सुविधा प्रदान की है। यहाँ हिन्दी सीखने वाले लोगों को आने-जाने के खर्च के अतिरिक्त छात्रवृति भी प्रदान की जाती है। विदेशों में हिन्दी प्रचार-प्रसार के अन्तर्गत सरकार द्वारा त्रिनिदाद, सूरीनाम,और गुयाना आदि देशों में हिन्दी प्राध्यापक प्रतिनियुक्ति पर भेजे जाते हैं।लेकिन इस कार्य में कुछ शिथिलता जरूर आई है। सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अन्तर्गत रूमानिया, चीन, कोरिया,क्यूबा, हंगरी, पौलैंड, बुल्गारिया आदि देशों में हिन्दी प्राध्यापक भेजे जाते हैं। दृश्य-श्रव्य तथा मुद्रित सामग्री उपलब्ध कराई जाती है जिनमें भारतीय संस्कृति, इतिहास और दर्शनशास्त्र पर हिन्दी में लिखी पुस्तकें, हिन्दी पाठ्य पुस्तकें, बच्चों के लिए कहानियों की पुस्तकें, शब्दकोश, हिन्दी शिक्षण किट, कंप्यूटर के लिए हिन्दी सॉफ्टवेयर शामिल हैं।

विश्व मंच पर हिन्दी का परचम लहराने में विश्व हिन्दी सम्मेलन का भी विशेष योगदान रहा है। जिसकी शुरुआत 10-14 जनवरी 1975 से नागपुर में हुई। 13-15 जुलाई 2007 को न्यूयॉर्क में सम्पन्न आठवें विश्व हिन्दी सम्मेलन में 'संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी' विषय पर विद्वानों द्वारा दिये गए व्याख्यानों में हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा के रुप में जगह दी जाए की पुरजोर वकालत की।

हिन्दी के प्रचार-प्रसार में हिन्दी फिल्मों की भूमिका भारत की सीमाओं तक सीमित नहीं है। बल्कि सउदी अरब, अफ़गानिस्तान, ईरान, इराक, अनेक अफ्रीकी देशों तथा सोवियत रूस तक हिन्दी फिल्मों ने अपनी पहुँच तथा लोकप्रियता के माध्यम से हिन्दी का परचम लहराया है। हिन्दी फिल्मों ने हिन्दी को एक लोकतान्त्रिक तथा धर्म-निरपेक्ष भाषा के रुप में प्रकाशित किया ही, उसे प्रकारान्तर से अंतर्राष्ट्रीय स्वरुप भी प्रदान किया है।

अलग-अलग राष्ट्रों में पारस्परिक संवाद की भाषा को अंतर्राष्ट्रीय भाषा कहा जाता है। आज के युग में इस प्रकार की भाषा की आवश्यकता और महत्व और भी बढ़ गया है, क्योंकि आज हम एक विश्वग्राम में रह रहे हैं। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिन्दी को विश्व भाषा का अधिकृत दर्जा अभी तक प्राप्त न हो सका हो, लेकिन उसके अंतर्राष्ट्रीय संदर्भों की अनदेखी नहीं की जा सकती।

डॉ. जवाहर सिंह
फैलो(हिन्दी)
मौलाना अबुल कलाम आज़ाद एशियाई अध्ययन संस्थान
(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार)
आई.बी.ब्लॉक, प्लॉट सं.-166, सेक्टर-3,
कोलकाता- 700106